आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received:12/06/2023; Accepted:16/06/2023; Published:24/06/2023

रामचरितमानस के नारी पात्रों का विश्लेषण

Dr.Vandana Sharma
Assistant Prof. Hindi
G.C.Nalwa-Hisar
House No. C-252, Model Town Extn. Hisar-125001
Contact No.7988667753

डॉ. वंदना शर्मा, **रामचरितमानस के नारी पात्रों का विश्लेषण**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023,(320-325)

रामचरितमानस भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। यह हिन्दू धर्म का महान प्रतिपाद्य एवं पूज्य ग्रन्थ है। तुलसीदास ने इस ग्रन्थ की रचना इस प्रकार से की है कि इसमें नाजा पुराण, निगमागम के विचारों का समावेश तो हुआ ही है, उसके बाहर के अधीत एवं अनुभूत-लोक-हितकारी विचारों की भी अन्विति हुई है।

नानापुराणनिगमागम सम्मतं, यद् निगददत्तं क्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा, भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति ।।

तुलसी ने रामचरितमानस में जिस कथा का निरूपण किया है, उसका संयोजन अन्य अनेक ग्रन्थों से लेकर किया है। 'रामचरितमानस' की सामग्री वेद, शास्त्र, पुराण, वाल्मीकि रामचरितमानस, अध्यात्म रामचरितमानस, हनुमन्नाटक आदि कई ग्रन्थों से ली गई है। तुलसी ने इन सारे ग्रन्थों में रामचरितमानस के लिए कथा – सूत्र एवं विषय-वस्तु का संकलन कर एक उदात्त कथा का सृजन किया, किन्तु सबसे बड़ी बात तो यह है कि तुलसी ने शब्दों को एक साथ अनुभूत कर आत्मसात कर लिया कि 'रामचरितमानस' की कथा किन्हीं अन्य ग्रन्थों से ली गयी न होकर तुलसी की स्वयं अनुभूत एक व्यापक कथा का अलौकिक संयोजन हो गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त संस्कृत वाङ्मय, समस्त आर्य संस्कृति एकत्र होकर तुलसी की रचना शैली की यह विशेषता है कि कहीं भी उसकी मौलिकता में व्याघात नहीं पहुँचता है। रामचरितमानस में नारी पात्रों का विश्लेषण न केवल उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं बल्कि सूक्ष्म विरोधाभासों और उन आदर्शों को उजागर करता है आदिकाल से मानव

समाज का हिस्सा रहे हैं| रामचरितमानस के नारी पात्रों का चित्रण विभन्न दृष्टिकोणों से करने पर उनके रिश्ते,घर और समाज में उनकी स्थिति ,महिलाओं के प्रति पुरुषों का रवैया,उनकी शिक्षा ,स्वंत्रता और मानदंड के बारे में हमें बहुत बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है .नारी से नर है, नारी से सृष्टि और सृजन है, नारी से ही समाज एवं राष्ट्र है। यदि नारी का ही नैतिक-चारित्रिक पतन हो जाए तो युवा पीढ़ी, समाज-राष्ट्र सब कुछ पथभ्रष्ट हो जाएगा, तबाह हो जाएगा। इसलिए नारी को राष्ट्र की आधारशिला कहा गया है। भारतीय संस्कृति में नारी को माता, देवी, जगदंबा आदि अनेक नामों से सम्मानित किया गया है और 'नारी तू नारायणी', 'यत्र नारी पूज्यंते रमंते तत्र देवता' जैसे घोषवाक्यों से उसका गुणगान और उसकी महिमा का वर्णन किया गया है।भारतीय समाज की ताकत सशक्त नारी ही है। वह मजबूत समाज की आधार शिला है। मानव कल्याण की भावना, कर्तव्य, सृजनशीलता और ममता को सर्वोपरि मानते हुए भारतीय महिलाओं ने मां के रूप में अपनी सर्वोपरि भूमिका निभाई है। राष्ट्र निर्माण और विकास के लिए विशेष दायित्व का निर्वहन रामचरितमानस-महाभारत काल से अब तक किया है। वह सामाजिक, शैक्षणिक और धार्मिक क्षेत्रों में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। भावी पीढ़ी के निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। नारी बच्चों को जन्म देकर उनका पालन-पोषण करते हुए उनमें संस्कार ओर सद्गुणों का विकास करती हैं।राष्ट्र का अभिमान है "नारी"। राष्ट्र की शान है नारी । भारतीय परिवेश व परिधान की शोभा है नारी । नर से नारायण की कहावत को चरितार्थ करती है नारी | मानवता की मिशाल है नारी ।संस्कृत में एक श्लोक है-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता|"[1]

अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है।

भारतीय समाज एवं जीवन पद्धति में स्त्री को भगवान की सर्वोत्कृष्ट कृति के रूप में स्वीकार किया गया है। इसका कारण यह नहीं कि वह शारीरिक, चारित्रिक या मानसिक अथवा सुंदरता की दृष्टि से अधिक आकर्षक होती है, वरन स्त्री का सृष्टि की सर्वोत्तम कृति होने का कारण उसमें मातृत्व है, जो उसे महिमा प्रदान करता है। अत: एक भारतीय अथवा वैदिक हिंदू परंपरा में स्त्री के मातृत्व के गुण को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, जो सृष्टि की निर्माता है और मानवीय गुणों की व्याख्याता और प्रदाता है। हमारी सनातन हिंदू संस्कृति का उद्घोष है मातृ देवो भव:-अर्थात मां इष्ट देव है, क्योंकि वह जीवन प्रदायनी है। अधिकतर धर्मों में नारी सशक्तिकरण का उदाहरण देखने को मिलता है जैसे हिन्दू धर्म में वेद नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण, गरिमामय, उच्च स्थान प्रदान

करते हैं। वेदों में स्त्रियों की शिक्षा- दीक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का सुन्दर वर्णन पाया जाता है । वेद उन्हें घर की सम्राज्ञी कहते हैं और देश की शासक, पृथ्वी की सम्राज्ञी तक बनने का अधिकार देते हैं।वेदों में स्त्री यज्ञीय है अर्थात् यज्ञ समान पूजनीय। वेदों में नारी को ज्ञान देने वाली, सुख – समृद्धि लाने वाली, विशेष तेज वाली, देवी, विदुषी, सरस्वती, इन्द्राणी, उषा- जो सबको जगाती है इत्यादि अनेक आदर सूचक नाम दिए गए हैं।वेदों में स्त्रियों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है – उसे सदा विजयिनी कहा गया है और उन के हर काम में सहयोग और प्रोत्साहन की बात कही गई है। वैदिक काल में नारी अध्यन- अध्यापन से लेकर रणक्षेत्र में भी जाती थी।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति, आचार-विचार तथा व्यवहार में स्त्री को मातृ शक्ति के रूप में स्वीकार करती है तथा उसे सर्वोच्च सम्मान प्रदान करती है। आधुनिक मानस तथा समाज शास्त्र भी यह स्वीकार करता है कि समाज के निर्माण में स्त्रियों की माता के रूप में बहुत बड़ी भूमिका होती है, क्योंकि मां न केवल जन्मदात्री है, बल्कि वह अपनी संतति को संस्कार तथा व्यवहार भी प्रदान करती है, जो आगे चलकर समाज का नेतृत्व करती हैं। रामचरितमानस में नारी पात्रों की अपनी आदर्शमय भूमिका जिसका निर्वहन गोस्वामी तुलसिदा की इस महान कृति में किया गया है..

1.**सीता:** रामचरित मानस के स्त्री पात्रों में सर्वाधिक आकर्षित करने वाला चरित्र सीता का है। कवि ने सीता में पतिपरायणा सती-साध्वी भारतीय नारी के दर्शन किये हैं, जो पति के ही एक मात्र सब कुछ समझती है। उसका व्रत नियम और धर्म केवल पति के चरणों में अनुराग है। वह कहती है कि-

एकइ धर्म एक व्रत नेमा काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥[2]

वह धूप और छाँह दोनों में ही पति के साथ समान भाव से रहना चाहती है। सीता के जीवन का व्रत और धर्म इन दो चौपाइयों में पूर्णतया व्यक्त हुआ है-

जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥[3]

अयोध्याकाण्ड में तुलसी ने सीता को एक आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित किया है। राम के वनगमन के बात सुनकर वह राजमहल के सम्पूर्ण ऐश्वर्य एवं सुख भोगों का त्यागकर बनवासी जीवन व्यतीत करने के लिए पति के साथ वन जाने को तैयार हो जाती है। वह अपने जीवन की सार्थकता वल्कल वरल धारण करने में ही समझती है। वह किसी भी स्थिति में पति का साथ छोड़ने को तैयार नहीं है। माता कौशल्या और राम के समझाने पर वह कहती है कि पति वियोग के समान संसार में कोई दुःख नहीं है।

मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं। पिय वियोग सम दुःख जग नाहीं ।।[4]

सीताराम की पत्नी ही नहीं, वह आदर्श नायिका भी हैं। तुलसी ने उसका चरित्र नायिका के अनुरूप ही चित्रित किया है। वह भारतीय कुल बन्धुओं का आदर्श हैं। उसमें नारीत्व के सभी गुण समाहित हैं इसीलिए उसकी धर्मभीरुता, पातिव्रत्य, त्याग, संयम, कष्ट, सहिष्णुता, गृहणीत्व आदि गुण भारतीय नारियों के लिए अनुकरणीय हैं। वह वन पथ में मिलने वाली सभी ग्रामीण स्त्रियों को शिक्षा देती है। इस प्रकार सीता सभी नारियों का नेतृत्व करती है।

2.कौशल्या: 'रामचरित मानस' में महारानी कौशल्या का चरित्र अत्यन्त उदार और आदर्शवादी है। ये महाराज दशरथ की सबसे बड़ी पत्नी और श्रीराम जी की जननी थीं। प्राचीन काल में मनु-शतरूपा ने तप करके भगवान को पुत्र रूप में प्राप्त करने का वरदान पाया था। वे ही मनु-शतरूपा इस जन्म में दशरथ और कौशल्या के रूप में अवतरित हुए। कौशल्या जी के चरित्र का प्रारम्भ अयोध्याकाण्ड से होता है। इस काण्ड में वह अपने स्त्री वैभव की सम्पूर्णता के साथ आती है। प्रातःकाल श्रीराम माता कैकेयी और पिता दशरथ महाराज से मिलकर वन गमन का निश्चय कर लेते हैं और माता कौशल्या से आज्ञा लेने के लिए उनके महल में जाते हैं। उस समय वह ब्राह्मणों द्वारा हवन करवा रही हैं। इतने में राम माता के समीप पहुँचते हैं। पुत्र को देखते ही कौशल्या दौड़कर उसे छाती से चिपका लेती हैं। माता कौशल्या के हृदय में वात्सल्य रस की बाढ़ आ जाती है, नेत्रों से प्रेमाश्रुओं की धारा बहने लगती है।जब कौशल्या को यह मालूम हुआ कि माता-पिता दोनों ने वन जाने की आज्ञा दी है तो उसने बड़ी बुद्धिमानी से विचार किया कि यदि मैं राम को हठ करके रोकती हूँ तो धर्म तो जायेगा ही साथ ही दोनों भाइयों में परस्पर विरोध भी हो सकता है-

राख सुतहि करउं अनुरोध। धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ॥[5]

जब दशरथ जी राम के वियोग में व्याकुल हो जाते हैं, उनका खानपान छूट जाता है-, शरीर पर मृत्यु के चिन्ह दिखाई पड़ने लगते हैं। नगर और महलों में कोलाहल मच जाता है, तब कौशल्या धैर्य धारण करके अपनु दुःख को भुलाकर अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्य को समझती हुई महाराज से कहती है

नाथ समुझि मन करिअ विचारू। राम वियोग पयोधि अपारू ।।
करनधार तुम्ह अवध जहाजू ।चढ़ेड सकल प्रिय पथिक समाजू ।।
धीरज धरिअ त पाइअ पारू । नाहि त वूड़िहि सब परिवारू।।[6]

3. सुमित्रा: रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत करने के लिए केवल श्रीराम ही नहीं राम चरित्र मानस के प्रत्येक पात्र की अपनी एक अहम भूमिका रही है। इसमें महारानी सुमित्रा का त्याग भी कुछ कम नहीं है। महारानी सुमित्रा त्याग की साक्षात प्रतिमा थीं। जब भगवान श्रीराम वन जाने लगे तब लक्ष्मण जी ने भी उनसे स्वयं को साथ ले चलने का अनुरोध किया। पहले भगवान श्रीराम ने लक्ष्मणजी को अयोध्या में रहकर माता-पिता की सेवा करने का आदेश दिया लेकिन लक्ष्मण ने किसी प्रकार से श्रीराम के बिना अयोध्या में रुकना स्वीकार नहीं किया। अन्त में श्रीराम ने लक्ष्मण को माता सुमित्रा से आज्ञा लेकर अपने साथ चलने को कहा। उस समय विदा माँगने के लिये

उपस्थित लक्ष्मण को माता सुमित्रा ने जो उपदेश दिया। उसमें भक्ति, प्रीति, त्याग, पुत्र-धर्म का स्वरूप, समर्पण आदि श्रेष्ठ भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

4.कैकयी: वे महाराजा दशरथ की सबसे छोटी पटरानी थीं। पति परायण, सेवा और स्नेह से संपूरित कैकेयी दशरथ की सबसे प्रिय रानी थीं। वे न केवल सुंदर और विदुषी थीं, बल्कि रथ संचालन और शस्त्र संचालन में भी निपुण थीं एवं ब़डी निडर थीं। अत: अमरावती तथा असुरों से युद्ध के समय वे राजा दशरथ के साथ गई थीं। इस युद्ध के दौरान राजा दशरथ का सारथी मारा गया था तो कैकेयी ने स्वयं घो़डों की रास हाथ में लेकर कुशलता से रथ संचालन किया था, इसी समय जब देखा कि रथ के पहिए की धुरी निकल गई है तो कैकेयी ने अपनी अंगुली को पहिए की धुरी बनाकर रथ की गति बनाए रखी थी। अंत में असुर पराजित हुए। प्रसन्न मन राजा दशरथ ने कैकेयी से दो वर मांगने को कहा, तब उन्होंने कहा था कि वे पति सेवा को ही सौभाग्य मानती हैं, जब भी आवश्यकता होगी, तब दो वरदान मांग लिए जाएंगे।ऐसी पति परायण, साहसी तथा विदुषी कैकेयी की भी मंथरा ने मति फेर दी और इस उक्ति को सत्य साबित कर दिया कि

'बरु मल बास नरक कर ताता, दुष्ट संग जन देहि विधाता।[7]

रामचरितमानस की एक और विशेषता यह है कि इसमें वर्णित सभी नारी पात्र चाहे वह मानव हों या दानव का चरित्र स्तुत्य है। रावण की पत्नी महारानी मंदोदरी तथा मेघनाद की पत्नी सुलोचना का चरित्र भी किसी से कम नही था। महारानी मंदोदरी को अपने पति रावण के प्रति पूर्ण समर्पण भाव था, किंतु वे सदैव अपने पति को आगाह करती रहती थी। रावण जब श्री सीताजी को हरण करके लाया था, तब भी मंदोदरी ने कई बार चेतावनी देकर सीता को वापस करने तथा श्री राम के साथ संधि करने के लिए रावण को समझाया था। इसी प्रकार से मेघनाद की पत्नी सुलोचना भी पतिव्रत्य धर्म की श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में स्वीकार की गई हैं।

इसी प्रकार से रामचरितमानस में महीयसी अहिल्या, अनुसुइया तथा शबरी के प्रसंग मिलते हैं। विश्वामित्र जब श्री रामलक्ष्मण को यज्ञ रक्षार्थ महाराजा दशरथ से मांग कर वन में ले गए थे-, वहां श्री राम लक्ष्मण ने ताड़का, सुबाहु आदि राक्षसों का वध किया, ब्राह्मणों, ऋषियों, मुनियों को अभय प्रदान किया; तब जनकपुर में धनुष यज्ञ का समाचार प्राप्त कर वे मुनि विश्वमित्र के साथ मिथिला नगरी की ओर बढ़े थे। मार्ग में एक निर्जन आश्रम मिला वहां गौतम मुनि की स्त्री अहिल्या शापवश पत्थर जैसी होकर वहां रहती थी। श्री राम ने अपना स्पर्श प्रदान कर उसमें फिर से चैतन्य भर दिया। यह अहिल्या अपने पति गौतम मुनि द्वारा परित्यक्त थीं, किंतु वह तपस्विनी थीं और अपनी तपस्या से उन्होंने समस्त स्त्री जाति को गौरवान्वित किया।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि रामचरितमानस संपूर्ण मानवता की ऐसी अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर है, जिसमें मानवीय चरित्रों, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, उसके सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित किया गया है, जिसका अनुसरण और अनुकरण हमें श्रेष्ठ मानव बनाता हैं। अत :रामचरितमानस का पठन, मनन, गायन हिंदू समाज को आज भी रास्ता दिखा रहा है।

सन्दर्भ –सूची:

1.मनुस्मृति तृतीय:अध्याय

2.रामचरितमानस तृतीय,अरण्यकाण्ड:दोहे की पंचम चौपाई की अर्द्धाली

3.रामचरितमानस दिवतीय, अयोध्याकाण्ड, दोहे की सप्तम चौपाई की अर्द्धाली

4.रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, 61 दोहे की 1 चौपाई की अर्द्धाली

5.रामचरितमानस ,अयोध्याकाण्ड :55 दोहे की अर्द्धाली की चौपाई 2

6.रामचरितमानस ,अयोध्याकाण्ड :55 दोहे की अर्द्धाली की चौपाई 3

7.रामचरितमानस ,सुंदरकाण्ड:46दोहे की 5 चौपाई की अर्द्धाली

****